ISBN: 978-93-94570-67-2

समकालीन सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रभाव

शीतल कुमारी

शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
कोल्हान विश्वविद्यालय,
चाईबासा, झारखण्ड।

आज की भागती–दौड़ती चुनौतीपूर्ण जिंदगी से मुक्ति पाने हेतु महात्मा गाँधीजी द्वारा रचित ''रचनात्मक कार्यक्रम'' इसका सटीक उपचार जान पड़ता है। समकालीन दौर में विश्व में एक ऐसे समाज का निर्माण करना अनिवार्य होता जा रहा है, जहाँ सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर सत्त विकास व सह–संबंध के तरीकों का व्यापक प्रभाव दर्ज किया जा सकें ताकि रचनात्मक विकास के साधन व अवसर प्रत्येक व्यक्ति और समूह को स्वच्छता से मिल सकें। आज विश्व स्तर पर जैसे–जैसे देश की समृद्धि और गौरव बढ़ती जा रही है वैसे–वैसे गरीबी भी व अन्य असंतोषजनक परिणाम भी हमारे समक्ष आते जा रहे हैं।

समकालीन दौर में मनुष्य अक्सर इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हो पाता कि उनके द्वारा किए गए कार्य नकारात्मक प्रभाव देगा या सकारात्मक बस, विकास के लिए आवश्यक है तो करना अनिवार्य है। जिसके परिणाम स्वरूप अधिकांश वक्त मानव–संकटों को जन्म देता है, जो मानव–संसाधन को क्षति तो पहुँचाती ही है साथ–ही–साथ मानवता के समक्ष नैतिक विकास की गलत रूपरेखा प्रस्तुत करती है। शांति व अहिंसा को आम–तौर पर समाज में उत्पन्न समस्याओं के समाधान के रूप में माना जाता है जो गाँधीजी के आदर्श समाज के निर्माण के लिए जरूरी है तथा इसे केवल रचनात्मक कार्यो के प्रयोग द्वारा ही स्थापित किया जा सकता है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में उत्पन्न चुनौतियों का हल केवल गाँधीजी के विचारों के गहन अध्ययन से ही पता चलेगा जो आज भी सामाजिक तनाव एवं आर्थिक समस्याओं का कारण बनी हुई है। इस परिवर्तित समाज में एकता के साथ अकेलेपन, अलगाव के साथ घनिष्ठता, सफलता के साथ असंतोष, संघर्ष के साथ शान्ति तथा समृद्धि के साथ दरिद्रता जैसी अनचाही घटनाएँ होती आई है। भले ही सुविधाओं के नाम पर लोग ऐसे–ऐसे कार्यो को करने में लग जाते हैं, यहाँ तक नहीं समझ पाते कि इसका परिणाम बाद में अर्थव्यवस्था पर भी पड़ सकता है। इसलिए गाँधीजी ने आजादी के पश्चात ही भारतीय नागरिकों को सच्चे स्वराज का अर्थ समझाते हुए कहा था कि ''सत्य और अहिंसात्मक साधनों से पूर्ण ''रचनात्मक कार्यक्रम'' के सभी सिद्धान्तों द्वारा ही वर्तमान व भविष्य के सभी चुनौतियों का डटकर सामना किया जा सकता है।''

महात्मा गाँधी का मानना था कि हमारे पारंपरिक तौर–तरीकों एवं आधुनिकरण से उत्पन्न संघर्ष व तनाव आदि सभी भावनाओं का व्यापक रूप देना मानवता के लिए आवश्यक हो जाता

है और यह केवल रचनात्मक कार्यो के आधार पर ही सम्पन्न हो सकता है। जिस प्रकार वर्तमान में उपस्थित सभी वर्ग, जाति, धर्म व नस्ल को एक साथ मिलाकर उन्नति के मार्ग पर चलना साम्प्रदायिक एकता का परिचय प्रस्तुत करता है। साम्प्रदायिक एकता सामाजिक स्तर पर उत्पन्न विषमता और हिंसा आदि को समाप्त करने में सहयोग प्रदान करता है। गाँधीजी ने भी रचनात्मक कार्यक्रम में साम्प्रदायिक एकता पर विशेष बल देते हुए वर्तमान के साथ–साथ सभ्य भविष्य के लिए भी जरूरी माना था। साम्प्रदायिक हिंसा ना केवल सामाजिक स्तर की बुरी तरह प्रभावित करती है, बल्कि देश के राजनीतिक व धार्मिक के साथ–साथ आर्थिक रूप से भी क्षति पहुंचाती है। इसलिए गांधीजी के अपने कार्यक्रमों द्वारा सदैव ही समकालीन समस्याओं के निवारण के साथ उन्नत भविष्य का भी सपना देखा था।

महात्मा गाँधी ने सदैव ही आत्मशुद्धि व नैतिक रूप से हृदय परिवर्तन में विश्वास रखा और यह उनके द्वारा किए गए कार्यो में भी झलकता है। आज भी समाज में स्थिति कई समाजिक बुराईयों का निवारण करना शेष है जिसे गाँधीजी ने भी अपने रचनात्मक कार्यो में दर्शाया था जैसा कि अस्पृश्यता निवारण, नशाबंदी और नारी उद्धार आदि को विशेष स्थान प्राप्त है। उनका मानना था कि अस्पृश्यता निवारण और नशाबंदी का निराकरण यह सवर्ण की जिम्मेदारी होती है। वर्तमान स्वरूप में देखे तो अस्पृश्यता, ईश्वर और मनुष्य के खिलाफ एक भंयकर अपराध के समान है तथा शराब व मदीरा आदि नशीली वस्तुओं की बात ही क्या कहना जिसने विकट महामारी (कोविड–19) के दौर में भी भारतीय की आर्थिक जिम्मेदारी उठा रखी थी। लोगों के पास भोजन व दवाईयाँ आदि के लिए पैसे नहीं होते थे, परन्तु शराब आदि का सेवन अवश्य करते थे, जो आज तक सामाजिक जीवन के लिए विघटनकारी प्रवृतियाँ का कारण बनी हुई है।

हमारे राष्ट्रपिता ने अपने संपूर्ण जीवन में नारी कल्याण या उत्थान की बात का समर्थन किया। वर्तमान में इसे महिला सशक्तिकरण के नाम से जाना जाता है। अवश्य ही शब्दों में फेर–बदल हुए है परन्तु स्वरूप वही है। गाँधीजी नारी उत्थान के पक्षधर तो रहे ही जिसे हम आजादी के लड़ाई के दौरान भी देख सकते थे। उन्होंने सदैव ही स्त्रियों एवं पुरूषों के सदृश्य अधिकार और स्वतंत्रता का समर्थन किया तथा स्त्रियों को वे परोपकार, प्रेम, करूणा, त्याग, दया, न्याय व सहनशीलता के साथ हृदय की शुद्धि के समान पवित्र मानते थे। गाँधीजी सामाजिक स्तर पर उपस्थित सभी महिला सम्बन्धी समस्याओं का जैसे– विधवा–विवाह, स्त्री–शिक्षा, पुर्नविवाह, बाल–विवाह, वेश्यावृत्ति, दहेज–प्रथा, पर्दाप्रथा व स्त्री–पुरूष समानता पर व्यापक सुधार लाना चाहते थे जो आज भी प्रासंगिक है।

आधुनिक समय में मानव वैज्ञानिक युग में जी रहा है, जहाँ सरकार की विभिन्न योजनाओं के परिणामस्वरूप कई उद्योगों को बढ़ावा मिला और कई नए उद्यमियों को अपनी ओर आकर्षित भी किया। साथ ही सरकार ने महात्मा गाँधी जी के रचनात्मक कार्यो से सम्बन्धित उद्योगों के उत्थान हेतु 'स्फूर्ति' योजना शुरू किया है जिसके अन्तर्गत खादी और ग्राद्योद्योग व ग्रामो का उत्थान आदि पर ताकि विशेष बल दिया जा सके। गाँधी जी ने भी खादी व चरखा आदि को बढ़ावा दिया क्योंकि वे मानते थे इसके द्वारा ही भारतीय अर्थव्यवस्था में उत्पन्न चुनौतियाँ, व्यापार व वाणिज्य सम्बन्धी समस्याएँ तथा भविष्य में आने वाली आर्थिक तंगी सभी कठिनाईयों का स्वच्छता से समाधान किया जा सकता है। गाँधीजी ने अपने समय के परिस्थिति और अपनी दूरगामी सोच से यह अनुमान लगाने में कारगर सिद्ध हुए थे कि अगर मानव जाति का

मानसिक व नैतिक उत्थान सही अर्थो में मनुष्य बनने में करें तो तथा साथ ही समस्या सामाजिक तथा आर्थिक स्तर के कार्यो को अन्तःआत्मा की आवाज सुनकर करे अर्थात् नैतिक मार्ग के द्वारा जो केवल रचनात्मक कार्यो से संभव है तो समाज अथवा मानवीय दुःख संकट तथा आधुनिक चुनौतियों आदि समस्याओं जैसे कोई परिस्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती।

आर्थिक स्तर में उत्पन्न चुनौतियाँ सदैव ही बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भूखमरी और अनेक बीमारियों को जन्म देती है, जो भारत की आर्थिक रूप के साथ सामाजिक दृष्टिकोण से भी क्षति पहुंचाती है। यह विकट परिस्थितियों में कई समस्याओं के साथ शहरों से लेकर गाँव को भी बुरी तरह प्रभावित करती है। इसलिए गाँधीजी ग्रामोद्योग आयोग का भी विकास करना चाहते थे। वे मानते थे कि ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने से ही भविष्य के परेशानिकयों को समाप्त किया जा सकता है। आज की सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में सहयोग के साथ सुरक्षा भी आवश्यक है। आर्थिक सहायता भी रचनात्मक कार्यक्रमों को एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है। चाहे वह मधुमक्खी पालन, पशुपालन, मुर्गी पालन, मिट्टी के बर्तन बनाना आदि ऐसे अनेक कार्य है जो कुटीर उद्योग, गृह उद्योग, लघु–उद्योग के रूप में किया जा सकता है, जिसके कारण आधुनिक चुनौतियों के समाधान में प्रयोग में लाया जा सकता है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता एवं शक्ति के अनुसार कार्य भी करने में सक्षम होगा।

आज के समय में रचनात्मक कार्यक्रम के कार्यो का प्रयोग विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितियों पर सुसंगत एवं तार्किक प्रतीत साबित हो सकता है। इस कार्यक्रम के द्वारा गाँधीजी स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा, बुनियादी शिक्षा के साथ, प्रौढ़ शिक्षा को भी बढ़ावा देने की बात संसार के समक्ष प्रस्तुत की थी, जो वास्तव में आधुनिक समय की आवश्यकता है। शिक्षा प्राप्त करना समस्त मानव समुदाय का कर्तव्य के साथ अधिकार भी है क्योंकि साक्षरता पढ़ाई के साथ–साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी, स्वच्छता सम्बन्धी ज्ञान, बुर्जुगो को शिक्षा प्रदान करना तथा बच्चों को बुनियादी शिक्षा अनिवार्य हो जाता है। गांधीजी ने शिक्षा को लेकर बड़े सुन्दर वाक्य कहा है –''शिक्षा का मतलब यह नहीं कि शिक्षा प्राप्त करके अच्छी नौकरी करें, अपितु शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान प्रदान करना है जिससे समस्या मानव समुदाय किसी भी क्षेत्र में उन्नति पर सकें। गांधीजी द्वारा प्रस्तुत नई तालीम वर्तमान में ''नई शिक्षा नीति 2020'' के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके द्वारा बच्चों के सर्वागीण विकास के साथ–साथ नैतिक चरित्र सम्बन्धित ज्ञान भी प्रदान करना आधुनिक समय के लिए अति जरूरी होता जा रहा है।

समकालीन चुनौतियाँ में एक बहुत जरूरी बात यह भी है कि किसी भी राष्ट्र के लिये जितना महत्वपूर्ण राष्ट्र ध्वज एवं राष्ट्रगीत का होता है उतना ही महत्व राष्ट्रभाषा का भी होना अवश्य होना चाहिए, परन्तु वर्तमान स्थिति पर गौर करें तो भारत ही शायद ऐसा देश है जहाँ राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी भाषा को अवश्य है, परन्तु आज भी हम अंग्रेजी भाषा के ही गुलाम है। इसलिए मुख्य रूप से गाँधीजी ने भारतीय राष्ट्रभाषा अर्थात हिन्दी भाषा के महत्व को सुरक्षित रखने के लिए रचनात्मक कार्यो का सहारा लिया, ना केवल राष्ट्रभाषा के सम्मान को बनाए रखने के लिए कार्य किया अपितु प्रादेशिक भाषाएँ के प्रचार पर भी रचनात्मक कार्यो की झलक देखने को मिलती है।

गाँधीजी अक्सर यह कहा करते थे भारत की आत्मा गाँव में बसती है। साथ ही साथ गाँव की रौनक वहाँ के रहने वाले किसानों व खेतिहरों के हाथों में रहती है। वर्तमान में भी भारत के

समक्ष सबसे बड़ी चुनौती किसानों की ही है, क्योंकि किसानों को अधिकांश समय, फसलों के व्यापार पर सही कीमत नहीं मिल पाती। किसानों का सामाजिक स्तर से मनोबल नीचे होता ही है तथा आर्थिक क्षति तो होती ही है। किसानों के अधिकारों, उसके सामने उत्पन्न समस्याएँ आदि सभी का समाधान हेतु रचनात्मक कार्यक्रमों के महत्वपूर्ण स्रोतों में भी किसानों को स्थान दिया गया है। गाँधीजी का मानना था कि ''ज्यादातर परिस्थिति में किसानों को दबा किया जाता है'' और इसका स्पष्ट उदाहरण हमें वर्तमान में देखने को मिल ही जाता है। गाँधीजी ने किसानों के कल्याण के साथ मजदूरों के विकास हेतु कई बार आंदोलन भी किए। वे मजदूरों को भी शुद्ध अहिंसा की बुनियाद पर खड़े होकर रचनात्मक कार्यो द्वारा उनका भी पक्षधर लिया करते थे। वे कहा करते थे ''जब तक किसान व मजदूर अपनी अहिंसक ताकत का प्रयोग नहीं करेगी, अपनी स्थिति सुधारने में तब–तक वर्तमान व भविष्य में आने वाली सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना जटिल होता जा सकता है।

आज हम विकास के जिस मार्ग पर चलते जा रहे हैं, वह मनुष्य के जीवन में प्रतिस्पर्धा व हिंसा बढ़ाता जा रहा है। यह हिंसक भावना वर्तमान पीढ़ी को भी काफी हद तक हानि पहुँचाती है जैसे कि विद्यार्थी समूह के जीवन को नकारात्मक प्रभाव डालती है। गाँधीजी का मानना था कि विद्यार्थी जीवन संघर्षपूर्ण सत्य के लिए है तो हिंसा का लेशमात्र उपयोग किए बिना भी वे अपनी सफलता सुनिश्चित करने में सक्षम हो सकता है। वर्तमान में सबसे अधिक महत्वपूर्ण विद्यार्थी को सही शिक्षा का मार्गदर्शन देना है और वह केवल रचनात्मक कार्यो के आदर्शो को जीवन में शामिल करने से ही संभव हो सकता है, ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास के साथ चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को भी पूरा किया जा सके।

अपने अंतिम भाग में गाँधीजी ने आदिवासी (पिछड़े वर्ग) एवं कुष्ठ रोगी अर्थात बीमारी सम्बन्धी विचारों को रचनात्मक कार्यक्रम का हिस्सा बनाया था। हमारे देश में जितनी अधिक जनसंख्या निवास करती है उससे भी अधिक विभिन्न वर्ग, जाति व धर्म के लोग निवास करते हैं तथा सभी मनुष्य की परिस्थिति भी अलग–अलग होती है। वर्तमान समय के समक्ष यह भी चुनौती आज भी उपस्थिति है लोग उच्च–नीच के अनैतिक भावनाओं से सामाजिक जीवन को क्षतिग्रस्त करते ही है साथ में यह बढ़ते–बढ़ते आर्थिक क्षति को भी अंजाम देते है। साथ ही साथ देखें तो कुष्ठ रोग या अन्य बिमारियाँ हमारे समाज का एक हिस्सा बनते जा रही है उदाहरण के तौर पर आज हमारे समाज में कोविड–19 जैसे विकट महामारी से जुझ रहा है जो सभी दृष्टिकोण से मानव समुदाय के लिए केवल और केवल घातक परिणाम भी लाता जा रहा है। यदि हम अहिसंक और नैतिकता की परिपेक्ष्य से देखे तो ज्यादातर आधुनिक चुनौतियाँ का सामना रचनात्मक कार्यक्रम के कार्यो के सुगमता से पालन करने मात्र से ही सम्भव हो सकता है, जो भविष्य में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के साथ मानवीय कल्याण को भी महत्व देगा।

निष्कर्ष :

आधुनिक 21 वीं सदी में मानवीय समुदाय जितनी तीव्र गति से वैश्वीकरण के दौर में अग्रसर होता जा रहा है उससे कही अधिक तीव्र गति से अपना नैतिक ह्रास करता जा रहा है। अनैतिक मार्ग पर बढ़ावा जैसी स्थिति में, महात्मा गांधी जी के ''रचनात्मक कार्यक्रम'' के कार्य हमारे समक्ष एक प्रज्जलित दीप के समान ही दिया है, लेकिन इस चकाचौंध जीवन में इन कार्यो को जरा भी महत्व नहीं दिया जा रहा है। यह भी सत्य है कि सामाजिक एवं आर्थिक

स्तर के विकास के लिए नए आयामों को अवश्य ही लाया जा रहा है, परन्तु इन विकास के साथ भारी असमानता व अस्थिरता भी उजागर होती जा रही है।

निःसन्देह ही सरकार ने आधुनिक चुनौतीपूर्ण समस्याओं के समाधान के लिए अवश्य ही प्रभावपूर्ण कदम उठाए है मगर इसका कुछ संतोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहा है। इसलिए आज भी गांधीजी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्य के सिद्धान्तों की जरूरत महसुस की जा सकती है, चाहे वह सामाजिक स्तर के महिला कल्याण हो, अस्पृश्यता निवारण हो, साम्प्रदायिक एकता हो या शिक्षा सम्बन्धी विचारों तथा आर्थिक स्तर पर रोजगार, बेरोजगारी सम्बन्धी विचार या आर्थिक सहायता के कार्यो आदि को धरातल पर उतारने की बात हो। ऐसी स्थिति में और भी तर्कसंगत हो जाता है कि ''रचनात्मक कार्यक्रम'' आधुनिक समय की आवश्यकता को भली–भांति पुरा करने में समर्थ है।

वास्तव में, गांधी जी के विचारों को कुछ पन्नों में दर्शना बहुत कठिन है, उनके विचारों, सिद्धान्तों कार्यो तथा उनके जीवन–दर्शन आज के चुनौतियों के लिए एकदम सही समाधान साबित हो सकते हैं। आज की स्थिति को देखते हुए गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह एकमात्र ऐसा स्रोत है जिसके द्वारा मानव अपने सामाजिक विकास, आर्थिक उन्नति, व्यापार–वाणिज्य में बढ़ोत्तरी तथा तकनीक सफलता के साथ ही साथ मानव संकट, अनैतिक, प्रतिस्पर्धा आदि मनुष्य के जीवन को बुरी तरह झकझोकती जीवन को तथा नकारात्मक सिद्धान्तों को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकता है ताकि आधुनिक स्तर पर विश्व के सभी देशों में तथा आंतरिक मामलों में भी समावेशी व सतत् विकास के सिद्धान्तों का नेतृत्व किया जा सके, ताकि एक सुरक्षित व सम्पूर्ण विश्व का निर्माण किया जा सके।

सन्दर्भ सुची :–

1. सी. शुक्ला : गाँधीजी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण नेशनल पब्लिकेशन, अहमदाबाद, 1986।
2. चन्द्रा, डॉ. मुदिता 2020 : महात्मा गाँधी विचारधारा और वर्तमान युग में प्रासंगिकता, भावना प्रकाशन 109–ए, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली–110091, भारत।
3. गाँधी, मोहनदास करमचन्द्र (1941) : रचनात्मक कार्यक्रम (उसका रहस्य और स्थान) नवजीवन प्रकाशन मंदिर, मुद्रणालय, अहमदाबाद, ISBN : 8172291094।
4. गाँधी, मोहनदास करमचन्द्र (Jan. 2011) : रचनात्मक कार्यक्रम (विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय) प्रकाशक–गाँधी सेवा–संघ, महादेवभाई भावन, सेवाग्राम वर्धा (महाराष्ट्र)।
5. कोकंडाकर जे0 आरा0, (1 जनवरी 2016) : महात्मा गाँधी और उनकी विचारधारा, श्री मंगेश प्रकाशन 23, नई रामदास–पेठ, नागपुर–440010 ।
6. योजना, अक्टुबर 2019, योजना भावना।
7. https://sarkariguider.in/वर्तमान–समय–में–गाँधीवाद।
8. https ://www.hindustantimes.com>gandhiji–रचनात्मक कार्यो का महत्व।
9. https://www.researchgate.net>3423.PDF–समकालीन भारत के सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में गाँधी का प्रभाव।

10. https://ballotboxindia.com/dp/ आओ–जाने–बापू–को –महात्मा–गाँधी–के–अर्थशस्त्र–रणनीति एवं सामाजिक दृष्टिकोण/5182580552।